



हरियाणा सहकारी प्रकाश

Haryana Sahkari Parkash

Publication Date 01.06.2026

Postal Registration No. G/CHD/0096/2024-26

Registrar of Newspapers of India

Regd. No. 46809/70 | Total Pages 32

Posted at MBU Chandigarh 1st of Every Month

वर्ष : 57 / अंक 05-06 / 1 जून, 2026 / वार्षिक मूल्य : ₹ 500 / प्रति कापी : ₹ 50



HARCO BANK - RURAL BRANCH
HARYANA STATE COOPERATIVE APEX BANK LTD.



ग्रामीण विकास
को सशक्त बनाना

100% पैक्स का
कम्प्यूटरीकरण
पूर्ण

हर किसान तक
पहुंच रही हैं केसीसी
योजनाएं

महिला उद्यमियों को
सशक्त बनाना



सहकारिता से
सशक्त हरियाणा



सहकारिता मंत्री, हरियाणा डॉ. अरविंद शर्मा नई दिल्ली में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह से शिष्टाचार भेंट करते हुए।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में सहकारिता क्षेत्र लगातार सशक्त हो रहा है और किसानों, युवाओं तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई ऊर्जा मिल रही है। सहकारिता क्षेत्र की अपार संभावनाओं, आधुनिक तकनीकों के उपयोग तथा ग्रामीण विकास में सहकारी संस्थाओं की भूमिका को लेकर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। केंद्र

सरकार की नीतियों से सहकारिता आंदोलन को नई पहचान मिली है और इसका लाभ देश के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए निरंतर कार्य किया जा रहा है। उन्होंने विश्वास जताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में सहकारिता क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

जय हरियाणा जय सहकार

हरियाणा सहकारी प्रकाश

मुख्य संरक्षक

राजीव रंजन, भा.प्र.से.
आयुक्त एवं सचिव
सहकारिता विभाग, हरियाणा

संरक्षक

डॉ. सुभीता ढाका, भा.प्र.से.
रजिस्ट्रार सहकारी समितियां,
हरियाणा

मुख्य सम्पादक

नरेश गोयल
प्रबन्ध निदेशक, हरकोफ़ैड

सम्पादक
सौरव अत्री



सुविचार

जीवन का हर क्षण साधना है,
हर कर्म को श्रेष्ठ बनाओ।

-अरविन्द घोष।

‘हरियाणा सहकारी प्रकाश’ में प्रकाशित लेखकों के विचारों के साथ हरकोफ़ैड का सहमत होना आवश्यक नहीं है। यह लेखकों के अपने विचार हैं।

हरियाणा सहकारी प्रकाश की विज्ञापन दरें :-

क्र.सं.	विवरण प्रति प्रकाशन	रुपये
1.	पूरा पृष्ठ टाईटल रंगीन	30000/-
2.	पूरा पृष्ठ रंगीन	20000/-
3.	पूरा पृष्ठ श्याम-श्वेत	12000/-
4.	आधा पृष्ठ श्याम-श्वेत	6000/-

इस अंक में पढ़िए

सम्पादकीय	4
डिजिटल युग में सहकारिता की नई पहचान National Cooperative Database से बदलता भारत का सहकारी परिदृश्य	5-6
स्वदेशी उत्पादों का संकल्प रू आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत की मजबूत आधारशिला	7
सहकार से समृद्धि - वर्ष 2029 तक प्रत्येक पंचायत में सहकारी समिति स्थापित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल	8-9
कैबिनेट ने डेयरी फार्मिंग के लिए स्वयं सहायता समूहों को 'शामलात देह' भूमि पट्टे पर देने को मंजूरी दी	10
हरियाणा में युवाओं को पर्यटन से जोड़ने की कवायद 30 मई को 6 ऐतिहासिक स्थलों पर होगी हेरिटेज एंड सिटी वॉक, पर्यटन मंत्री ने लॉन्च किया हेरिटेज वॉक पोस्टर	11-12
ऑनलाइन दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम	13
पृथ्वी दिवस पर वृक्षारोपण का संकल्प	14
कर्मचारी प्रशिक्षण	15
दस दिवसीय महिला प्रशिक्षण	16
किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम	17
विद्यार्थी चेतना कार्यक्रम	18-19
पंचकूला जिला केंद्रीय सहकारी बैंक (डीसीसीबी पंचकूला) में पतंजलि कैटल फीड बिजनेस पर सीएससी Training आयोजित	20
शोक सूचना	20
योग दिवस विशेषांक	21-22
लू से कैसे बचें	23
माँ	24
तुलसी की उन्नत खेती	25-26
सपना	27-29
विज्ञापन	30-31

देश का अन्नदाता :- किसान

हमारे देश में किसान का महत्व एक सर्वेदनशील विषय है, जिसे गंभीरता से संभालने की ज़रूरत है। किसान भारतीय समाज की रीढ़ की हड्डी है क्योंकि किसान अपने परिवार व खुद को भूखा रखकर पूरे देश का पेट भरते हैं अर्थात् किसान देश का अन्नदाता है। आज भारत के लोग विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में लगे हुए हैं, लेकिन कृषि भारत का मुख्य व्यवसाय है। 1970 के दशक से पहले भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं था और खाद्यान्न लाभ का एक बड़ा हिस्सा दूसरे देशों से आयात करना पड़ता था। परन्तु जब हमारे आयात ने हमें ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया तो उस समय के प्रधानमंत्री एवं भारत के महान नेता श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने एक विकल्प खोजा और हमारे किसानों को प्रेरित किया। 'जय जवान जय किसान' का नारा इन्हीं द्वारा दिया गया था। तत्पश्चात् भारत में 'हरित क्रान्ति' की शुरुआत हुई और हम खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर हो गए। किसान अर्थव्यवस्था की प्रेरक शक्ति भी है इसलिए हमारी आबादी का एक बड़ा हिस्सा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस में शामिल है। किसानों का भारतीय अर्थव्यवस्था में लगभग 17 प्रतिशत का योगदान होता है जो सब चीजों से अतिरिक्त सबसे ज्यादा है लेकिन निराशाजनक बात यह है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में किसानों का इतना ज्यादा योगदान होने के बावजूद एक किसान समाज की हर सुख-सुविधा से वंचित है। आज भी बहुत बड़ी संख्या में भारतीय किसानों के पास खुद का घर नहीं है और उनकी हालत अब भी संतोषजनक नहीं है। हालांकि किसान हर फसल पर अपनी पूरी मेहनत करते हैं लेकिन दुर्भाग्य से कई बार उनकी फसल में कभी रोग लग जाता है या तेज बारिश एवं ओलावृष्टि के कारण उनकी साल भर की मेहनत बर्बाद हो जाती है। केन्द्र और राज्य सरकार की अनेक योजनाएं किसानों के हित में चल रही हैं जिनकी जानकारी भी उनको नहीं हो पाती। समस्या यह भी है कि उन्हें पर्याप्त साधन के साथ-साथ पर्याप्त भुगतान भी नहीं किया जा रहा। बहुत ऐसे कारणों को देखते हुए हमारे समाज में किसानों की वर्तमान स्थिति में सुधार की ज़रूरत है। इसलिए हमारे देश में किसान के समृद्ध भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए हम सभी को उनको समर्थन करना चाहिए। जो किसान अनेको ऋण एवं संघर्षों से घिरे रहने के बावजूद भी कभी खेती करना नहीं छोड़ते और पूर्ण समाज का पेट भरने के लिए कभी आराम नहीं करते, हमें देश के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में ऐसे किसान भाइयों के लिए आगे आना चाहिए क्योंकि हम उनके बिना एक दिन भी अपने जीवन को जी नहीं सकते।

हरकोफ़ैड की अपील है कि हमें किसान के महत्व को समझने की आवश्यकता है एवं उनके लिए ठोस कदम उठाने की ज़रूरत है। किसानों के बगैर हमारे जीवन की कल्पना करना असम्भव है इसलिए उनके साथ हमें देश की सेना जैसा सम्मानजनक व्यवहार करना चाहिए।

डिजिटल युग में सहकारिता की नई पहचान National Cooperative Database से बदलता भारत का सहकारी परिदृश्य

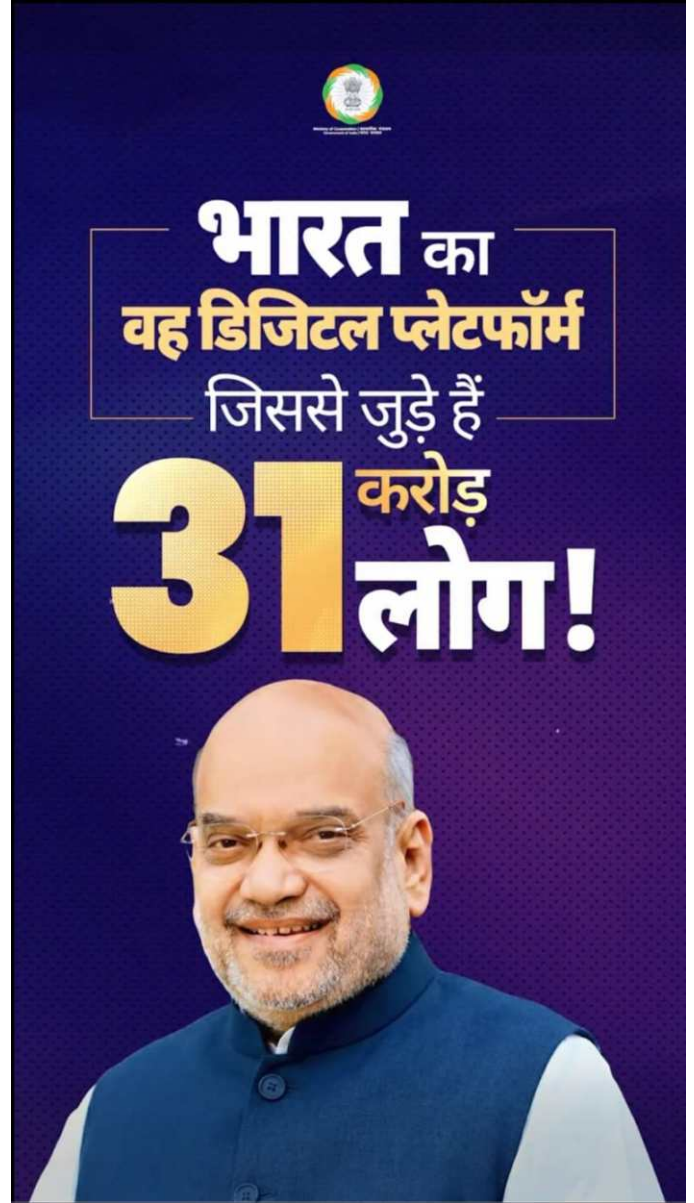
भारत में सहकारिता आंदोलन सदैव सामाजिक समरसता, आर्थिक सहभागिता और ग्रामीण विकास का आधार रहा है। स्वतंत्रता के बाद देश की कृषि, डेयरी, ग्रामीण बैंकिंग और उपभोक्ता व्यवस्था को मजबूत करने में सहकारी संस्थाओं ने ऐतिहासिक योगदान दिया। आज भी करोड़ों किसान, श्रमिक, महिलाएं और ग्रामीण परिवार सहकारी संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

21वीं सदी के इस डिजिटल युग में भारत सरकार सहकारिता आंदोलन को नई तकनीक, पारदर्शिता और आधुनिक प्रबंधन से जोड़ने का कार्य कर रही है। इसी दिशा में सहकारिता मंत्रालय द्वारा विकसित National Cooperative Database (NCD) एक ऐतिहासिक पहल के रूप में सामने आया है।

8 मार्च 2024 को केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने राष्ट्रीय सहकारी डेटाबेस का शुभारंभ करते हुए इसे स्वतंत्र भारत के सहकारी इतिहास का एक महत्वपूर्ण क्षण बताया। उन्होंने कहा कि पहली बार देश की लाखों सहकारी समितियों की जानकारी एक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हुई है, जो आने वाले वर्षों में सहकारी क्षेत्र के विकास का "डिजिटल कम्पास" सिद्ध होगा।

राष्ट्रीय सहकारी डेटाबेस एक वेब-आधारित डिजिटल डैशबोर्ड है, जिसमें देशभर की सहकारी समितियों की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई गई है। इसमें कृषि, डेयरी, मत्स्य, बैंकिंग, उपभोक्ता, श्रम, चीनी मिल, विपणन तथा अन्य अनेक क्षेत्रों की सहकारी संस्थाओं का डेटा शामिल है। वर्तमान में इसमें 8 लाख से अधिक सहकारी समितियों और 30 करोड़ से अधिक सदस्यों की जानकारी उपलब्ध है।

इस डेटाबेस की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह सहकारी क्षेत्र को पारदर्शी, संगठित और डेटा-आधारित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। पहले विभिन्न राज्यों और विभागों में बिखरी हुई



जानकारी के कारण योजनाओं और नीतियों के क्रियान्वयन में कठिनाइयां आती थीं। अब NCD के माध्यम से सरकार और नीति निर्माताओं को वास्तविक समय में प्रमाणिक जानकारी प्राप्त हो रही है। इससे यह तय करना आसान हो गया है कि किस क्षेत्र में नई सहकारी समितियों की आवश्यकता है, कहां विकास की संभावनाएं हैं और किन संस्थाओं को सुदृढ़ करने की जरूरत है।

राष्ट्रीय सहकारी डेटाबेस को तीन चरणों में विकसित किया गया। पहले चरण में PACS, डेयरी और मत्स्य सहकारी समितियों का मानचित्रण किया गया। दूसरे चरण में राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय फेडरेशनों और सहकारी बैंकों को जोड़ा गया। तीसरे चरण में शेष प्राथमिक सहकारी समितियों को शामिल किया गया। आज यह डेटाबेस देश के सहकारी क्षेत्र का सबसे बड़ा डिजिटल सूचना भंडार बन चुका है।

भारत सरकार द्वारा सहकारी क्षेत्र के डिजिटलीकरण पर विशेष बल दिया जा रहा है। PACS के कंप्यूटरीकरण, डिजिटल बैंकिंग, ERP आधारित प्रणालियों और RuPay कार्ड जैसी योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण भारत को आधुनिक वित्तीय व्यवस्था से जोड़ा जा रहा है। इससे किसानों को अधिक पारदर्शी, त्वरित और सरल सेवाएं मिल रही हैं।

हरियाणा जैसे कृषि प्रधान राज्य के लिए यह पहल विशेष महत्व रखती है। राज्य की PACS, डेयरी समितियां, विपणन संस्थाएं और ग्रामीण सहकारी बैंक अब डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से

राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर समन्वय स्थापित कर पा रहे हैं। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई गति मिल रही है।

सहकारिता मंत्रालय का उद्देश्य केवल डेटा संग्रह करना नहीं, बल्कि सहकारी संस्थाओं को भविष्य के लिए तैयार करना है। आने वाले समय में National Cooperative Database सहकारी क्षेत्र के लिए "डिजिटल बैकबोन" के रूप में कार्य करेगा। इससे पारदर्शिता बढ़ेगी, जवाबदेही मजबूत होगी और सहकारी संस्थाओं की विश्वसनीयता में वृद्धि होगी।

आज जब भारत "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य की ओर अग्रसर है, तब सहकारिता आंदोलन को डिजिटल रूप से सशक्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। National Cooperative Database इस दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है, जो "सहकार से समृद्धि" के राष्ट्रीय संकल्प को नई ऊंचाइयों तक पहुंचा रहा है।

निस्संदेह, यह पहल केवल तकनीकी सुधार नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत की आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक सशक्तिकरण का नया अध्याय है।



स्वदेशी उत्पादों का संकल्प : आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत की मजबूत आधारशिला

माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने देशवासियों से स्वदेशी उत्पादों के उपयोग एवं व्यापार को बढ़ावा देने का आह्वान करते हुए कहा है कि यदि भारत के 140 करोड़ नागरिक स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने का संकल्प लें, तो भारत वर्ष 2047 से पहले ही विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त कर सकता है। उनका यह संदेश केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र निर्माण, आत्मनिर्भरता और भारतीय संस्कृति के गौरव से जुड़ा हुआ एक व्यापक दृष्टिकोण है।

आज भारत विश्व की सबसे तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। देश में "आत्मनिर्भर भारत" और "वोकल फॉर लोकल" जैसे अभियान केवल सरकारी योजनाएं नहीं, बल्कि जनआंदोलन का रूप ले चुके हैं। स्वदेशी उत्पादों का उपयोग बढ़ने से देश के किसानों, बुनकरों, कारीगरों, लघु एवं कुटीर उद्योगों तथा सहकारी संस्थाओं को नई शक्ति और स्थायित्व प्राप्त होगा। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और लाखों युवाओं के लिए रोजगार एवं स्वरोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

भारत की सहकारिता व्यवस्था सदैव ग्रामीण विकास और आर्थिक सशक्तिकरण का आधार रही है। सहकारी संस्थाएं किसानों एवं ग्रामीण उत्पादकों को बाजार उपलब्ध कराने, उत्पादन बढ़ाने और आर्थिक आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। हरकोफ़ेड जैसी संस्थाएं किसानों एवं ग्रामीण समुदाय को उन्नत कृषि, विपणन एवं स्वदेशी उत्पादों से जोड़कर राष्ट्रहित में सराहनीय कार्य कर रही हैं।

स्वदेशी उत्पादों को अपनाने का अर्थ केवल देश में निर्मित वस्तुओं की खरीद तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय उद्यमिता, स्थानीय उद्योगों और श्रम शक्ति का सम्मान भी है। जब देश का नागरिक स्थानीय उत्पाद खरीदता है, तो उसका सीधा लाभ देश के किसान, मजदूर, कारीगर और छोटे व्यापारी तक पहुंचता है। इससे देश की आर्थिक पूंजी देश के भीतर ही मजबूत होती है और



आयात पर निर्भरता कम होती है।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत आज वैश्विक स्तर पर नई पहचान बना रहा है। ऐसे समय में स्वदेशी का संकल्प देश को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। यदि प्रत्येक नागरिक अपने दैनिक जीवन में स्वदेशी वस्तुओं को प्राथमिकता देने का संकल्प ले, तो भारत आर्थिक, सामाजिक एवं औद्योगिक दृष्टि से विश्व का अग्रणी राष्ट्र बन सकता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि सहकारिता क्षेत्र, युवा शक्ति, किसान, व्यापारी और आम नागरिक मिलकर "स्वदेशी अपनाओ – राष्ट्र मजबूत बनाओ" के संकल्प को जन-जन तक पहुंचाएं। यही संकल्प विकसित भारत, आत्मनिर्भर भारत और समृद्ध भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करेगा।

स्वदेशी केवल एक आर्थिक विचार नहीं, बल्कि राष्ट्रभक्ति, आत्मसम्मान और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। जब देश का प्रत्येक नागरिक स्वदेशी को अपनाएगा, तभी भारत विश्व मंच पर एक सशक्त, आत्मनिर्भर और अग्रणी राष्ट्र के रूप में स्थापित होगा।

सहकार से समृद्धि : वर्ष 2029 तक प्रत्येक पंचायत में सहकारी समिति स्थापित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल



"वर्ष 2029 तक देश की प्रत्येक पंचायत में एक सहकारी समिति होगी, जिससे समृद्धि हर गांव और हर किसान तक पहुंचेगी।"

— श्री अमित शाह, माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री

भारत गांवों का देश है और देश की वास्तविक शक्ति गांवों, किसानों तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था में निहित है। यदि गांव मजबूत होंगे तो देश स्वतः ही सशक्त और आत्मनिर्भर बनेगा। इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए भारत सरकार ने "सहकार से समृद्धि" के मंत्र के साथ एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसके अंतर्गत वर्ष 2029 तक देश की प्रत्येक पंचायत में कम से कम एक सहकारी समिति स्थापित की जाएगी। यह पहल केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत को आर्थिक, सामाजिक और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है।

सहकारी समिति का मूल आधार "सहयोग" है। जब गांव के लोग मिलकर सामूहिक रूप से कार्य

करते हैं, संसाधनों को साझा करते हैं और लाभ को समान रूप से बांटते हैं, तब विकास की गति कई गुना बढ़ जाती है। भारत में सहकारिता आंदोलन का इतिहास काफी पुराना रहा है। दुग्ध उत्पादन से लेकर कृषि, बैंकिंग, विपणन तथा ग्रामीण उद्योगों तक सहकारी संस्थाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अमूल जैसी सफल सहकारी संस्थाओं ने यह सिद्ध किया है कि यदि संगठन मजबूत हो और उद्देश्य स्पष्ट हो, तो गांवों की तस्वीर बदली जा सकती है।

आज देश का किसान अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। खेती की बढ़ती लागत, बाजार में उचित मूल्य न मिलना, भंडारण की कमी, कर्ज की समस्या तथा तकनीकी जानकारी का अभाव किसानों

की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करता है। ऐसी परिस्थिति में सहकारी समितियां किसानों के लिए आशा की नई किरण बन सकती हैं। सहकारी समितियों के माध्यम से किसानों को सस्ती दरों पर बीज, खाद, कीटनाशक तथा कृषि उपकरण उपलब्ध कराए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त किसानों को अपनी उपज के उचित विपणन और भंडारण की सुविधा भी प्राप्त हो सकती है।

सरकार का उद्देश्य केवल सहकारी समितियों की संख्या बढ़ाना नहीं है, बल्कि उन्हें आधुनिक तकनीक और पारदर्शिता से जोड़कर प्रभावी बनाना भी है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, कंप्यूटराइजेशन तथा ऑनलाइन सेवाओं के माध्यम से सहकारी संस्थाओं को अधिक सक्षम और पारदर्शी बनाया जा रहा है। इससे भ्रष्टाचार कम होगा और किसानों को सीधे लाभ प्राप्त होगा। साथ ही, छोटे एवं सीमांत किसानों को भी आर्थिक मुख्यधारा से जोड़ने में सहायता मिलेगी।

महिलाओं की भागीदारी भी इस अभियान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला स्वयं सहायता समूहों और महिला सहकारी समितियों के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। इससे न केवल परिवार की आय बढ़ेगी, बल्कि महिलाओं का सामाजिक सम्मान और निर्णय लेने की क्षमता भी मजबूत होगी। इसी प्रकार

युवाओं को भी कृषि आधारित उद्योगों, डेयरी, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन और ग्रामीण स्टार्टअप्स से जोड़कर रोजगार के नए अवसर प्रदान किए जा सकते हैं।

“सहकार से समृद्धि” का यह अभियान आत्मनिर्भर भारत की भावना को भी मजबूत करता है। जब गांव आर्थिक रूप से सक्षम होंगे, किसान आत्मनिर्भर बनेंगे और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, तब ग्रामीण पलायन में कमी आएगी और देश की अर्थव्यवस्था को नई मजबूती मिलेगी। यह पहल सामाजिक समानता, आर्थिक विकास और सामुदायिक सहयोग का उत्कृष्ट उदाहरण है।

अंततः कहा जा सकता है कि वर्ष 2029 तक प्रत्येक पंचायत में सहकारी समिति स्थापित करने का लक्ष्य भारत के ग्रामीण विकास के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध होगा। यह पहल केवल किसानों की आय बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि गांवों को समृद्ध, आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने की दिशा में एक व्यापक परिवर्तनकारी अभियान है। यदि समाज, सरकार और ग्रामीण समुदाय मिलकर इस मिशन को सफल बनाते हैं, तो “सहकार से समृद्धि” का सपना निश्चित रूप से साकार होगा और भारत विश्व के सामने ग्रामीण विकास का एक आदर्श मॉडल प्रस्तुत करेगा।



कैबिनेट ने डेयरी फार्मिंग के लिए स्वयं सहायता समूहों को 'शामलात देह' भूमि पट्टे पर देने को मंजूरी दी

चंडीगढ़, 18 मई— हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में आज हुई कैबिनेट की बैठक में विकास एवं पंचायत विभाग के एक प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। इस प्रस्ताव के तहत, हरियाणा राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (HSRLM) के साथ पंजीकृत स्वयं सहायता समूहों (SHGS) को डेयरी फार्मिंग के उद्देश्य से 'शामलात देह' (सामुदायिक) भूमि उपलब्ध कराई जाएगी।

इस उद्देश्य के लिए कैबिनेट ने 'हरियाणा ग्राम सांझी भूमि (विनियमन) नियम, 1964' के नियम 6 में संशोधन को संबंधित नियमों और शर्तों के साथ मंजूरी दे दी है।

संशोधित प्रावधानों के बाद, ग्राम पंचायतों को हरियाणा राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के साथ पंजीकृत स्वयं सहायता समूहों और स्वयं सहायता समूहों की सहकारी समितियों को डेयरी स्थापित करने के लिए 500 वर्ग गज तक की 'शामलात देह' भूमि पट्टे पर देने की अनुमति होगी। यह पट्टा शुरू में दो साल की अवधि के लिए दिया जाएगा, और डेयरी के संतोषजनक संचालन के आधार पर (जैसा कि हरियाणा राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा प्रमाणित किया जाएगा), इसे और तीन साल के लिए बढ़ाया जा सकता है।

हालांकि, पट्टे की कुल अवधि पाँच साल से अधिक नहीं होगी। इस नीति को स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से तैयार किया गया है, ताकि वे डेयरी इकाइयों का सफलतापूर्वक संचालन करने के बाद अंततः स्वतंत्र रूप से अपनी भूमि खरीद सकें।



शुरुआती दो साल की अवधि के बाद पट्टे की अवधि बढ़ाने के लिए, संबंधित उपायुक्त (Deputy Commissioner) की पूर्व मंजूरी अनिवार्य होगी। उपायुक्त ही ग्राम पंचायतों को ऐसी भूमि पट्टे पर देने के लिए मंजूरी प्रदान करने हेतु सक्षम प्राधिकारी के रूप में कार्य करेंगे।

संशोधित नीति में आगे यह भी निर्धारित किया गया है कि स्वयं सहायता समूहों के सदस्य उसी गाँव या ग्राम पंचायत के निवासी होने चाहिए। इसके अलावा, कोई भी स्वयं सहायता समूह भूमि आवंटन के लिए तब तक पात्र नहीं होगा, जब तक कि उसके किसी सदस्य या उनके परिवार के सदस्यों (जैसा कि 'परिवार पहचान पत्र' – PPP के माध्यम से पहचाना गया हो) के पास 500 वर्ग गज या उससे अधिक की अपनी निजी भूमि न हो।



हरियाणा में युवाओं को पर्यटन से जोड़ने की कवायद 30 मई को 6 ऐतिहासिक स्थलों पर होगी हेरिटेज एंड सिटी वॉक, पर्यटन मंत्री ने लॉन्च किया हेरिटेज वॉक पोस्टर

हरियाणा सरकार ने युवाओं को पर्यटन के साथ जोड़ने के लिए नया एजेंडा तय किया है। हरियाणा में 30 मई को प्रदेश भर में दूसरी हेरिटेज एंड सिटी वॉक 2026 आयोजित की गई। पर्यटन एवं सहकारिता मंत्री डॉ. अरविंद कुमार शर्मा ने चंडीगढ़ में पत्रकारों से बातचीत में बताया कि हरियाणा पर्यटन निगम द्वारा 'आओ चलें अपनी विरासत के साथ' मुहिम के तहत 30 मई को सुबह 6 बजे से 8 बजे तक प्रदेश के छह प्रमुख स्थलों पर दूसरी हेरिटेज एंड सिटी वॉक आयोजित की जाएगी। इस अवसर पर उन्होंने हेरिटेज एंड सिटी वॉक के लिए विशेष ब्रोशर का भी विमोचन किया।

उन्होंने कहा कि इस पहल का उद्देश्य प्रदेशवासियों, विशेषकर युवाओं, विद्यार्थियों और महिलाओं को हरियाणा की समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत से जोड़ना है, ताकि नई पीढ़ी अपने इतिहास और सांस्कृतिक मूल्यों को समझ सके तथा उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सके।

डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा कि प्रदेश के विरासत स्थलों और पर्यटन स्थलों के विकास, संरक्षण और सौंदयीकरण के लिए 100 करोड़ रुपये से अधिक की राशि खर्च की जा रही है। सरकार की सोच केवल ऐतिहासिक भवनों और स्थलों के

संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि आमजन, विशेषकर युवाओं को अपनी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूक करना भी इसका महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

डॉ. अरविंद शर्मा ने बताया कि भविष्य में प्रत्येक माह इस प्रकार की वॉक आयोजित करने की योजना है, ताकि अधिक से अधिक लोग प्रदेश की विरासत से जुड़ सकें और विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें।

उन्होंने बताया कि हैरिटेज एंड सिटी वॉक में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों को क्यूआर कोड के माध्यम से पंजीकरण करना होगा। इसकी पूरी जानकारी और पंजीकरण संबंधी विवरण वेबसाइट पर उपलब्ध है। इसके अलावा इच्छुक लोग मौके पर पहुंचकर भी अपना पंजीकरण करवा सकेंगे। उन्होंने बताया कि प्रति व्यक्ति 500 रुपये शुल्क निर्धारित किया गया है, जिसमें पानी, चाय, कॉफी, टोपी तथा अल्पाहार उपलब्ध कराया जाएगा। सभी स्थानों पर हैरिटेज गाइड की व्यवस्था भी की गई है, जो प्रतिभागियों को संबंधित स्थलों के इतिहास और महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी देंगे।

पिंजौर, मोरनी, कुरुक्षेत्र, सूरजकुंड, रेवाड़ी और बल्लभगढ़ में होगी हैरिटेज वॉक।

डॉ. अरविंद शर्मा ने बताया कि इस बार प्रदेश के छह प्रमुख स्थलों को हैरिटेज एंड सिटी वॉक के लिए चिन्हित किया गया है। पंचकूला जिले के पिंजौर में यादवेंद्र गार्डन, गुरुद्वारा मंजी साहिब, भीमा देवी मंदिर स्थल संग्रहालय, धारामंडल पिंजौर और प्राकृतिक बावड़ी का भ्रमण कराया जाएगा। मोरनी क्षेत्र में ऐतिहासिक मोरनी किले का भ्रमण



कराया जाएगा। कुरुक्षेत्र में ज्योतिसर तीर्थ स्थल, सरोवर, विराट स्वरूप तथा महाभारत अनुभव केंद्र संग्रहालय का भ्रमण कराया जाएगा। फरीदाबाद के सूरजकुंड क्षेत्र में सूरजकुंड जलाशय से असोला-भाटी वन्यजीव अभयारण्य तक भ्रमण कराया जाएगा। रेवाड़ी में सैंडपाइपर पर्यटक परिसर से बड़ा तालाब तक तथा बल्लभगढ़ में राजा नाहर सिंह महल से रानी की छतरी तक भ्रमण कराया जाएगा। इस अवसर पर हरियाणा पर्यटन निगम की महाप्रबंधक ममता शर्मा सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।



ऑनलाइन दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

विषय: "सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 एवं दण्ड एवं अपील नियम"

हरियाणा प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान (HIPA), गुरुग्राम द्वारा सहकारिता विभाग, हरियाणा के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 29 एवं 30 अप्रैल, 2026 को "सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 एवं दण्ड एवं अपील नियम" विषय पर ऑनलाइन दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 1:30 बजे तक गूगल मीट माध्यम से संपन्न हुआ।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विशेष रूप से सहकारिता विभाग, हरियाणा के अधिकारियों और कर्मचारियों को सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की नवीनतम प्रावधानों, न्यायिक व्याख्याओं तथा दण्ड एवं अपील नियमों की विस्तृत जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को पारदर्शी, उत्तरदायी एवं प्रभावी प्रशासनिक कार्यप्रणाली के प्रति जागरूक करना तथा सूचना अधिकार से संबंधित प्रकरणों के निस्तारण में उनकी दक्षता को बढ़ाना था।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभाग के लगभग 30 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान विषय विशेषज्ञ राजबीर ढाका द्वारा सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के मूल प्रावधानों, आवेदन प्रक्रिया, अपील प्रणाली, लोक सूचना अधिकारियों की भूमिका, समय-सीमा, दायित्वों एवं दण्डात्मक प्रावधानों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। साथ ही, प्रतिभागियों को

अधिनियम से संबंधित नवीनतम न्यायालयीन निर्णयों एवं प्रशासनिक व्याख्याओं से भी अवगत कराया गया, जिससे वे अपने विभागीय कार्यों में अधिनियम का अधिक प्रभावी ढंग से अनुपालन कर सकें।

द्वितीय सत्र में "दण्ड एवं अपील नियम" विषय पर विस्तृत चर्चा की गई, जिसमें विभागीय अनुशासन, सेवा आचरण, दण्ड प्रक्रिया, अपील के प्रावधान तथा प्रशासनिक उत्तरदायित्व जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को सरल एवं व्यावहारिक रूप में समझाया गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी विशेषज्ञों द्वारा विस्तारपूर्वक किया गया।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध हुआ। कार्यक्रम के माध्यम से प्रतिभागियों ने न केवल सूचना का अधिकार अधिनियम की कानूनी एवं प्रशासनिक बारीकियों को समझा, बल्कि विभागीय अनुशासन एवं उत्तरदायित्व से जुड़े नियमों की भी गहन जानकारी प्राप्त की।

सहकारिता विभाग, हरियाणा से अतिरिक्त रजिस्ट्रार सहकारी समितियां सुश्री पूनम नारा, श्रीमती सुमन बल्हारा, श्रीमती कविता धनखंड, संयुक्त रजिस्ट्रार, सहकारी समितियां श्री योगेश शर्मा प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित रहे। अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशासनिक दक्षता, पारदर्शिता तथा उत्तरदायित्व को सुदृढ़ करने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयास है।

हरियाली की ओर कदम - पृथ्वी दिवस पर वृक्षारोपण का संकल्प



हर वर्ष 22 अप्रैल को मनाया जाने वाला पृथ्वी दिवस हमें प्रकृति के प्रति अपने दायित्वों की याद दिलाता है। बढ़ते प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और घटते वन क्षेत्र के बीच वृक्षारोपण एक ऐसा सरल लेकिन प्रभावशाली कदम है, जो पृथ्वी के संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हरकोफ़ेड के कर्मचारियों ने पृथ्वी दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

पृथ्वी दिवस के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न अधिकारियों, कर्मचारियों, ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। उन्होंने सभी से अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी देखभाल करने का संकल्प लेने का आह्वान किया।

वृक्ष न केवल हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, बल्कि वे वायु प्रदूषण को कम करने, जल संरक्षण में

सहायक बनने तथा जैव विविधता को संरक्षित रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आज जब पृथ्वी ग्लोबल वार्मिंग जैसी गंभीर समस्याओं का सामना कर रही है, तब वृक्षारोपण एक प्रभावी समाधान के रूप में सामने आता है।

सामूहिक सहभागिता

इस कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि इसमें सभी प्रतिभागियों ने यह संकल्प लिया कि वे न केवल पौधे लगाएंगे, बल्कि उनकी नियमित देखभाल भी करेंगे।

पृथ्वी दिवस पर आयोजित यह वृक्षारोपण कार्यक्रम केवल एक दिन का आयोजन नहीं, बल्कि एक सतत अभियान की शुरुआत है। यदि प्रत्येक व्यक्ति हर वर्ष कम से कम एक पौधा लगाएँ और उसकी देखभाल करें, तो हम अपनी पृथ्वी को हरा-भरा और सुरक्षित बना सकते हैं।

कर्मचारी प्रशिक्षण

दिनांक 20.05.26 को दी हरियाणा राज्य सह विकास प्रसंघ लिमिटेड पंचकुला के तत्वाधान से जिला रोहतक के केंद्रीय सहकारी बैंक के सभागार में कर्मचारी प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में जिले की बहुउद्देशीय सहकारी समितियां व सहकारी बैंक रोहतक के कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। हरकोफ़ैड पंचकुला से सहायक सहकारी शिक्षा अधिकारी श्री सत्यनारायण यादव ने कर्मचारियों को सहकारी मूल्यों व सिद्धांतों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि जीवन में व्यवसाय में मूल्यों का बहुत ही महत्व है। सहकारी मूल्यों से सहकारिता को बल मिलता है।

हरियाणा राज्य प्रशासनिक संस्थान रोहतक से डॉक्टर ललित कुमार ने सहकारी कर्मचारी को

वित्तीय प्रबंधन के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि वित्तीय साक्षरता के बिना वित्तीय प्रबंधन करना आसान नहीं होता। उन्होंने कहा कि सभी कर्मचारी अपनी समितियां में अच्छे से वित्तीय प्रबंधन करेंगे तो देश के विकास में अच्छे तरीके से भागीदारी होगी। श्री गौतम शर्मा (सेवानिवृत्त) डी.सी.सी.बी रोहतक ने कर्मचारियों को रिक्वरी करने के लिए सुझाव दिए और कानूनी गुर भी बताएं। अंत में सभी कर्मचारियों ने हरकोफ़ैड के सहायक सहकारी शिक्षा अधिकारी श्री सत्यनारायण यादव और अर्चना देवी शिक्षा निदेशक का ज्ञानात्मक कक्षा के आयोजन के लिए धन्यवाद किया।



दस दिवसीय महिला प्रशिक्षण

महिला प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दी हरियाणा सह विकास प्रसंग पंचकूला के तत्वाधान से गुरुग्राम के गाँव बयास में दस दिवसीय महिला प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें स्वयं सहायता समूह की 30 सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम में महिलाओं को कटाई सिलाई का प्रशिक्षण दिया गया। सहकारी शिक्षा अधिकारी ने बताया कि महिलाओं को सहकारिता का अर्थ, मूल्य व लाभ की जानकारी होने के बाद सहकारिता की

ताकत का प्रयोग आसान हो जाता है।

श्रीमती मंजु घीलावास में महिलाओं को पारम्परिक पहनावे के वस्त्र बनाने का प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद महिलाओं ने विश्वास दिलाया कि अब वह अच्छे से कटाई सिलाई कर सकती हैं और कपड़े सिलकर बाजार में रेडीमेड स्टोर की दुकानों पर बेचकर व्यवसाय शुरू कर सकती हैं।



किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 16.05.26 को जिला गुरुग्राम में मोजाबाद में दी हरियाणा राज्य सहकारी विकास प्रसंग के तत्वाधान से किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 50 से अधिक किसानों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के शुरुआत में हरकोफ़ेड पंचकूला को सहकारी शिक्षा अधिकार के सहायक सहकारी शिक्षा अधिकारी वृत्त रोहतक ने किसानों को सहकारिता का परिचय देते हुए सहकारी समितियों की उपयोगिता के बारे में बताया कि किसान भाई सहकारी समितियां बनाकर व संगठित करके कृषि उत्पादन को अच्छे मूल्यों में बेच सकते हैं।

कार्यक्रम में जानकारी देते कहा गया कि किसान समेकित बहुउद्देशीय गतिविधि सहकारी समिति बनाकर अपने कृषि व्यवसाय को संगठित करें। उन्होंने बताया कि सहकारी समिति बनाकर युवा अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और स्वयं रोजगार से दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर प्रदान कर सकते हैं। जैविक खेती किसान श्री कृष्ण कौशिक मोजाबाद ने किसानों को जैविक कृषि करने



के फायदे व जैविक खेती करने के तरीके बताएं।

दी पटौदी बहुउद्देशीय सहकारी समिति ने प्रबंधन श्री महेश यादव ने किसानों को बताया कि जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए हरियाणा सरकार किसानों को दस हजार रुपए प्रति एकड़ की दर से 5 वर्षों तक वित्तीय सहायता दे रही है। इसके अलावा जैविक उत्पादों की ब्रांडिंग के लिए बीस हजार प्रति किसान और देसी गाय खरीदने पर तीस हजार की सब्सिडी दी जा रही है।



विद्यार्थी चेतना कार्यक्रम

—एस एन कौशिक



मानव विकास में, सहकारिता एक आधार है, जिसके द्वारा आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, लोकतांत्रिक व आधार भूत ढांचे को समृद्ध व सुदृढ़ किया है। विकासशील भारत ने विश्व पटल पर सहकारिता से समृद्धि की मिसाल पेश की है। कृषि प्रधान प्रदेश हरियाणा में श्री नायब सिंह सैनी जी, मुख्यमंत्री

हरियाणा सरकार के कुशल नेतृत्व में किसानों, मजदूरों, कामगारों, दुकानदारों, स्वयं सहायता समूहों, संयुक्त देयता समूहों, एवं सभी प्रकार की सहकारी समितियों के उत्थान के लिए, डॉक्टर अरविन्द शर्मा जी सहकारिता मंत्री हरियाणा सरकार द्वारा दिन रात एक करके सहकार बंधुओं के लिए सहकारिता विभाग को एक नई दिशा प्रदान की है। सभी सहकारी समितियों व संस्थाओं में प्रचार व प्रसार के लिए हरकोफैंड एक कड़ी के रूप में कार्यरत हैं जो शिक्षा व प्रचार के माध्यम से जागरूकता का कार्य करती है। इसी कड़ी में जिला झज्जर के 05 स्कूलों में विद्यार्थी चेतना कार्यक्रमों का आयोजन एस एन कौशिक, शिक्षा अनुदेशक द्वारा हरकोफैंड पंचकुला के तत्वाधान में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय माजरा डी, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जहाजगढ़, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक

विद्यालय बिसान, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दुजाना व सांखौल में, कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन स्कूल में पढ़ रहे नौवीं कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा की विद्यार्थियों में सहकारिता व सहयोग की भावना को प्रबल करने, सहकारिता के इतिहास व विषय वस्तु से अवगत करवाकर सहकारिता को अपनाने का आह्वान किया गया। विशेष तौर पर कार्यक्रम में सहकारिता स्वच्छता, जल व पर्यावरण संरक्षण पर प्रकाश डालकर गर्मी से बचने के उपाय भी बताए गए। कार्यक्रमों में, संबंधित स्कूलों के प्रधानाचार्यों श्री महताब सिंह, श्री मनोज भाटिया जी, श्रीमती पूनम जी, श्री रामबीर पाराशर जी व संजय राठी का विशेष व सराहनीय योगदान रहा व संबंधित स्कूलों के प्राध्यापक व अध्यापक वर्ग ने भी उपस्थित दर्ज करवाई व मंच संचालन भी किया। जिला झज्जर के इन पांचों अग्रणी स्कूल में नौवीं से बारहवीं तक के 1110 विद्यार्थियों ने भाग लिया जिसमें से 527 छात्र व 583 छात्राओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। सभी स्कूलों में आयोजित कार्यक्रम में विषय वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया और प्रत्येक स्कूल के 05-05 विद्यार्थियों को डाक्यूमेंट फाइल (20 लीफ्स) व हरकोफैंड के लोगों सहित, सही उत्तर देने वाले पांचों विद्यार्थियों को पुरस्कार के रूप में प्रधानाचार्यों के कर कमलों से पुरस्कृत करवाया तथा बच्चों की स्मृति हेतु बच्चों के फोटो बाद में तैयार करवाकर हरकोफैंड की ओर से इनाम स्वरूप दिए जाएंगे। सभी स्कूलों द्वारा हरकोफैंड का विद्यार्थी चेतना कार्यक्रम के आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया और भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रमों को आयोजित करने का अनुरोध किया।



विद्यार्थी चेतना कार्यक्रम



दिनांक 18.05.2026 से 21.05.2026 में एस.के. एस. 'राजकीय उच्च विद्यालय गांव बालन्द / राजकीय व. मा. विद्यालय गांव गरनावढी / एस.आर. राजकीय व मा. विद्यालय गांव बालन्द / राजकीय व. मा. विद्यालय गांव करौथा / राजकीय कन्या उच्च विद्यालय गांव कबूलपूर जिला रोहतक में 05 विद्यार्थी चेतना कार्यक्रमों का आयोजन हरियाणा राज्य सहकारी विकास प्रसंघ लि. पंचकूला द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम राजकीय विद्यालयों के प्रांगण में शिक्षा अनुदेशक श्रीमती अर्चना देवी ने करीब 323 विद्यार्थियों को बताया कि कैसे हरकोफैंड पूरे हरियाणा प्रान्त में विभिन्न माध्यमों के द्वारा सहकारिता का प्रचार व प्रसार कर रही है। सहकारिता की परिभाषा, सिद्धान्त का उदाहरणों से वर्णन किया गया। सहकारिता को अपनाते ऐसे काम करने चाहिए जैसे स्कूल में काम आने वाला सामान समूह बनाकर व थोक की दुकान या सीधे फैक्टरी से ही खरीदवाना चाहिए, इससे माता-पिता की मेहनत की कमाई बचेगी और जो बचत होगी वो आगे चलकर काम आएगी। कार्यक्रम में बताया गया कि नई सहकारी समिति कैसे बनवाई जा सकती है और हम रोजगार

लेने नहीं रोजगार देने वाले बन सकते हैं। स्वच्छ भारत अभियान 02 अक्टूबर 2014 से 02 अक्टूबर 2019 तक अभियान चलाया गया इस कार्यक्रम में भी अभियान को चलाये रखने का जागरूक किया गया ताकि हम सब एक स्वच्छ वातावरण में रह सके। कार्यक्रम में वीटा एवं अमूल के बारे भी चर्चा की गई, महोदया के हाथों द्वारा दस्तावेज फाइलें वितरित की गई। इन कार्यक्रमों में सहकारिता की भावना से जुड़कर विद्यार्थी समाज के विकास में योगदान दे सकते हैं। स्कूल के प्रधानाचार्य ने हरकोफैंड द्वारा किए गए कार्य की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से ही समाज में जागरूकता आएगी।



पंचकूला जिला केंद्रीय सहकारी बैंक (डीसीसीबी पंचकूला) में पतंजलि कैटल फीड बिजनेस पर सीएससी Training आयोजित

पंचकूला जिला केंद्रीय सहकारी बैंक (डीसीसीबी पंचकूला) में कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) द्वारा पतंजलि कैटल फीड बिजनेस को बढ़ावा देने हेतु एक विशेष Training का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य पैक्स प्रबंधकों को कैटल फीड वितरण से संबंधित जानकारी प्रदान करना तथा उन्हें नए व्यावसायिक अवसरों से जोड़ना था।

कार्यक्रम में डॉ. प्रफुल्ल रंजन, प्रबंध निदेशक, हारको बैंक ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने सीएससी, डीसीसीबी एवं पतंजलि की संयुक्त पहल की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की गतिविधियाँ सहकारी व्यवस्था को मजबूत करने तथा पैक्स को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

इस अवसर पर श्री यशवीर सिंह, महाप्रबंधक, डीसीसीबी पंचकूला द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं पैक्स प्रबंधकों का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा पैक्स के उत्थान एवं व्यवसाय विविधीकरण के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं तथा सीएससी के माध्यम से पतंजलि कैटल फीड बिजनेस को अपनाकर पैक्स अतिरिक्त आय अर्जित कर आर्थिक रूप से और अधिक सुदृढ़ हो सकती हैं। कार्यक्रम में श्रीमती उर्वशी गुप्ता, महाप्रबंधक हरको बैंक तथा श्रीमती सुधा शर्मा, उप महाप्रबंधक हरको बैंक विशेष रूप से उपस्थित रहीं। श्री ऋषि पवार, महाप्रबंधक, पतंजलि ग्राम उद्योग न्यास द्वारा पतंजलि कैटल फीड पर विस्तृत प्रस्तुति दी गई,



जिसमें उत्पाद की गुणवत्ता, पोषण लाभ एवं इसके व्यावसायिक मॉडल की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। कार्यक्रम का समन्वय श्री मोहित शर्मा, राज्य प्रबंधक, सीएससी तथा श्री संजीव, जिला प्रबंधक, सीएससी द्वारा किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में बताया कि सीएससी, पतंजलि एवं पैक्स के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य कर सकता है तथा ग्रामीण स्तर पर इस व्यवसाय को सफल बनाने में सहयोग देगा। Training में डीसीसीबी पंचकूला के अंतर्गत कार्यरत सभी पैक्स प्रबंधकों ने भाग लिया तथा कैटल फीड बिजनेस से संबंधित विभिन्न संभावनाओं एवं अवसरों की जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन एवं पतंजलि कैटल फीड पहल को सफल बनाने के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

शोक सूचना



जगमहेन्द्र (मुख्य लिपिक) का जन्म दिनांक 1 जून 1971 गांव सच्चा खेडा जिला जीन्द में हुआ। इन्होंने दिनांक 11.05.1998 को हरकोफैड मुख्यालय में बतौर दफ्तरी के पद पर ज्वाइन किया। इन्होंने दिनांक 27.12.2024 को मुख्य लिपिक के पद पर सेवा प्रदान की। दिनांक 31.05.2029 को

इन्होंने सेवानिवृत्त होना था परन्तु 07.04.2026 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वह अपने पीछे भरा-भरा परिवार छोड़कर गए हैं। इनके निधन से सहकारी विभाग में शोक की लहर है। हरकोफैड के अधिकारियों, कर्मचारियों ने शोक व्यक्त कर परिवार के लिए सांत्वना प्रकट की।

योग दिवस विशेषांक

प्रतिवर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। वर्ष 2014 में भारत के प्रस्ताव पर संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया। यह भारत की सांस्कृतिक विरासत का वैश्विक सम्मान है।

आज की व्यस्त जीवनशैली में मनुष्य शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनाव से घिरता जा रहा है। अनियमित दिनचर्या, असंतुलित खान-पान, बढ़ता प्रदूषण, तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता और व्यस्तता ने हमारे जीवन को असंतुलित कर दिया है। ऐसे समय में योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि एक समग्र जीवन-पद्धति के रूप में हमारे सामने उपस्थित है। योग शरीर को स्वस्थ, मन को शांत और आत्मा को संतुलित बनाने का सरल, प्रभावी और वैज्ञानिक माध्यम है।

योग भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है, जिसने न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में स्वास्थ्य और शांति का संदेश दिया है। आज योग केवल एक अभ्यास नहीं, बल्कि स्वस्थ और सुखी जीवन जीने की कला बन चुका है।

‘योग’ शब्द धातु ‘युज्’ से बना है, जिसका अर्थ है जोड़ना। योग का तात्पर्य है आत्मा का परमात्मा से मिलन, शरीर का मन से समन्वय, और व्यक्ति का प्रकृति से जुड़ाव।

योग केवल शारीरिक आसनों तक सीमित नहीं है। यह जीवन को संतुलित, अनुशासित और सार्थक बनाने की एक संपूर्ण प्रक्रिया है। योग हमें सिखाता है कि मनुष्य केवल शरीर नहीं, बल्कि शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित रूप है।

महर्षि पतंजलि ने योग को परिभाषित करते हुए कहा है—

“योगश्चित्तवृत्तिनिरोध ” अर्थात् मन की चंचल वृत्तियों को नियंत्रित करना ही योग है।

योग का इतिहास : योग का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। इसका उद्गम भारत में हजारों वर्ष पूर्व हुआ। वेदों, उपनिषदों, भगवद्गीता और पुराणों में योग का विस्तृत वर्णन मिलता है। महर्षि पतंजलि को योग का जनक माना जाता है। उन्होंने योग को व्यवस्थित रूप से योगसूत्र में प्रस्तुत किया। उनके द्वारा बताए गए अष्टांग योग आज भी योग की मूल आधारशिला माने जाते हैं। आधुनिक समय में स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंद, परमहंस योगानंद, स्वामी शिवानंद, बाबा रामदेव और अनेक योगाचार्यों ने योग को जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

योग के प्रकार

योग अनेक प्रकार का होता है, जो व्यक्ति की आवश्यकता और प्रकृति के अनुसार अपनाया जा सकता है।





अष्टांग योग महर्षि पतंजलि ने योग के आठ अंग बताए हैं, जिन्हें अष्टांग योग कहा जाता है—

यम	—नैतिक अनुशासन
नियम	—व्यक्तिगत अनुशासन
आसन	—शारीरिक मुद्राएँ
प्राणायाम	—श्वास नियंत्रण
प्रत्याहार	—इंद्रियों का संयम
धारणा	—एकाग्रता
ध्यान	—मन का स्थिर होना
समाधि	—आत्मिक एकत्व

ये आठों अंग मिलकर मनुष्य को संपूर्ण स्वास्थ्य और आत्मिक उन्नति की ओर ले जाते हैं।

योग शरीर को स्वस्थ, सुदृढ़ और लचीला बनाता है। इसके नियमित अभ्यास से अनेक शारीरिक लाभ प्राप्त होते हैं—

शरीर में लचीलापन बढ़ता है, मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं, रीढ़ की हड्डी स्वस्थ रहती है, रक्त संचार बेहतर होता है, पाचन तंत्र सुदृढ़ होता है, हृदय स्वस्थ रहता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। योग से मधुमेह, उच्च रक्तचाप और गठिया जैसी समस्याओं में लाभ मिलता है। योग शरीर को केवल बलवान नहीं, बल्कि संतुलित और ऊर्जावान बनाता है। योग का सबसे बड़ा प्रभाव मन पर पड़ता है। आज तनाव, चिंता, अवसाद और अनिद्रा जैसी समस्याएँ सामान्य हो गई हैं। योग इन समस्याओं से मुक्ति दिलाने में अत्यंत सहायक है।

योग से मन शांत और स्थिर होता है, तनाव कम होता है, एकाग्रता बढ़ती है, स्मरण शक्ति बेहतर होती है, आत्मविश्वास बढ़ता है। सकारात्मक सोच विकसित होती है, क्रोध और चिंता नियंत्रित होती है, नींद अच्छी आती है योग मन को संतुलित कर व्यक्ति को मानसिक रूप से मजबूत बनाता है।

योग केवल शरीर और मन तक सीमित नहीं है। यह आत्मा की शुद्धि और आंतरिक जागरण का मार्ग भी है। योग से आत्मचिंतन की क्षमता बढ़ती है, जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है,

आत्मा की शांति का अनुभव होता है, अहंकार कम होता है, धैर्य, करुणा और सहनशीलता बढ़ती है योग मनुष्य को भीतर से समृद्ध और शांत बनाता है।

योग को जीवन का हिस्सा बनाना अत्यंत आवश्यक है। यदि व्यक्ति प्रतिदिन केवल 20–30 मिनट भी योग करे, तो वह स्वयं को अधिक स्वस्थ, ऊर्जावान और प्रसन्न अनुभव कर सकता है। विद्यार्थियों के लिए योग एकाग्रता बढ़ाता है, कर्मचारियों के लिए योग तनाव कम करता है, महिलाओं के लिए योग शारीरिक और मानसिक संतुलन देता है और वृद्धजनों के लिए योग स्वास्थ्य और गतिशीलता बनाए रखता है। इस प्रकार योग हर आयु वर्ग के लिए लाभकारी है।

आज विज्ञान भी योग के महत्व को स्वीकार कर चुका है। अनेक शोधों में सिद्ध हुआ है कि योग तनाव हार्मोन को कम करता है, हृदय रोगों का खतरा घटाता है, मानसिक स्वास्थ्य सुधारता है, फेफड़ों की क्षमता बढ़ाता है, प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है इसी कारण विश्वभर के चिकित्सक भी योग को स्वस्थ जीवन के लिए उपयोगी मानते हैं।

योग केवल सुबह की दिनचर्या नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है।

योग सिखाता है — संतुलन, संयम, अनुशासन, धैर्य, सकारात्मकता और हमें स्वयं से जोड़ता है, हमारी आंतरिक शक्ति को पहचानने में सहायता करता है और जीवन को सार्थक बनाता है।

योग भारत की प्राचीन परंपरा ही नहीं, आधुनिक जीवन की आवश्यकता भी है। यह शरीर को स्वस्थ, मन को शांत और आत्मा को प्रकाशित करता है। योग केवल रोगों से बचने का साधन नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित, सकारात्मक और आनंदमय बनाने का मार्ग है। आज आवश्यकता है कि हम योग को केवल एक दिवस तक सीमित न रखें, बल्कि उसे अपनी दिनचर्या और जीवनशैली का अभिन्न अंग बनाएँ।

**योग अपनाएँ, स्वास्थ्य पाएँ,
मन और तन का तालमेल बनाएँ**

लू से कैसे बचें



हर वर्ष हमारे देश में हजारों लोग लू के कारण असमय ही मौत के आगोश में चले जाते हैं। लू अर्थात् गर्म शुष्क हवाएं बहुत अधिक गर्मी विशेषकर मई जून में ज्यादा चलती है और थोड़ी सी सावधानी से इससे बचा जा सकता है।

सामान्यता कोई भी व्यक्ति तब लू के चपेट में आता है जब वह तेज धूप में बाहर जाता है अथवा किसी गर्म जगह/कमरे, जहाँ पर कोई भी पंखा, कूलर आदि ना हो, में देर तक काम करता है और वहाँ पर उस जगह के गर्म होने के कारण उसे अत्यधिक पसीना आता है, घबराहट होने लगती है, सिर चकराने लगता है। ऐसी स्थिति में जानिये लू से कैसे करें बचाव लू में क्या रखे सावधानियाँ

- लू से बचने के लिए दोपहर के समय बाहर नहीं निकलना चाहिए। अगर जाएँ तो सिर को किसी कपड़े से ढक लेना चाहिए। कपड़ा इस तरह बांधें कि दोनों कान भी ढक जाएँ।
- गर्मी के मौसम में मुलायम, ढीले सूती कपड़े पहनें, जिससे कपड़े शरीर के पसीने को सोखते रहें।
- गर्मी में हलका व शीघ्र पचने वाला भोजन करें। घर से बाहर जाते समय खाली पेट ना जाएँ।
- गर्मी के मौसम में अण्डा, माँस मछली, गर्म मसाला, चाय और शराब आदि चीजों का प्रयोग बिल्कुल नहीं करना चाहिए।
- गर्मी के दिनों में बार बार पानी पीते रहें जिससे पानी

की कमी ना हो। दिन में दो-तीन बार पानी में नींबू व नमक मिलाकर पीते रहने से लू नहीं लगती है।

- गर्मी में मौसमी फलों जैसे, खरबूजा, तरबूज अंगूर इत्यादि का सेवन अवश्य ही करें।
- गर्मी के दिनों में प्याज का अधिक सेवन करें एवं बाहर जाते समय कटे प्याज को जेब में रखना चाहिए।
- गर्मी में आम के पन्ने का सेवन बहुत अधिक करें, इससे लू से बचाव होता है।
- बेल वा नींबू का शरबत शरीर में पानी की कमी को दूर करता है इससे भी लू से बचाव होता है।
- बाहर से आने के बाद तुरंत नहीं वरन थोड़ा रुक कर जब शरीर का तापमान सामान्य हो जाये तभी ठंडा नहीं सादा पानी पीना चाहिए।

लू के घरेलू उपचार :

- अगर किसी को लू लग जाए तो उस व्यक्ति को तुरंत प्याज का रस शहद में मिलाकर दें इससे शीघ्र ही फायदा मिलता है, लू का प्रकोप दूर होता है।
- लू लगने पर इमली के गुदे को हाथ पैरों के तलवों पर मलें, इससे मरीज की हालत में शीघ्र सुधार होता है, लू का असर समाप्त हो जाता है।
- अनार के रस में खाण्ड या मिश्री मिलाकर उसका सेवन करना चाहिए। इससे लू में आराम मिलता है।
- लू लगने पर रोगी के शरीर को थोड़ी-थोड़ी देर के बाद गीले तौलिये से पोंछना चाहिए।
- लू लगने पर घड़े या सुराही के पानी में नींबू की शिकजवी (उसमें थोड़ा सा नमक भी डालें) बना कर पिलानी चाहिए।
- साफ पानी में धनिया को पीस कर उसमें जीरे का चूर्ण और मिश्री मिलाकर खाएं इससे लू नहीं लगती है, अगर लू लगी हो तो उसमें तुरंत लू से राहत मिलती है।
- धनिया को पीस कर पानी में घोलकर उसमें चीनी मिलाकर पियें इससे लू का असर दूर होता है।
- कच्चे आम को भूनकर, उसे पानी में मसलकर छान लें फिर उसमें स्वाद के अनुसार चीनी और जीरा मिलाकर लेने से लू का प्रकोप शांत होता है।

माँ

माँ त्याग,
समर्पण, सहनशीलता, प्यार, अपनापन, अनूठापन,
सुंदरता, मानवता, संयुक्ता, ममता, समता,
तल्लीनता जिनके गुण होते हैं वह माँ होती है।

तमाम उम्र अपने आँचल में समेटे हुए,
रिश्तों को संजोकर सहजता को साथ लिए,
खूबसूरत छोटे से संसार की रचना का दायित्व उठाते हुए,
जिंदगी की विपरीत परिस्थितियों में हौसले को बढ़ाते हुए,
जो निडरता से पग रखती है वह माँ होती है।

दृढ़ विश्वास के साथ मुस्कान होठों पर लिए,
प्यार आँखों में मूंदकर सबको संतुष्ट करते हुए,
संतोष के साथ दुआ देते हुए संघर्ष को अपनाते हुए,
जो सदैव दूसरों की चिंता करती है वह माँ होती है।

हर सांस की टूटी डोर को जोड़ते हुए,
गजब की चमक मासूम चेहरे में हर्ष भर देती है,
साधारण सी शैली में दिव्यता धारण करती है,
अपनी मुस्कान से खुशियों भर देती हैं
वह माँ होती है।

रक्षा करने वाली रक्षिता होती है,
हर क्षेत्र में संपूर्णा होती है,
जिसके आँचल में प्रसन्नता छिपी रहती है,
और वाणी में दुआ बनी रहती है,
वह सर्वदा अमर रहती है, वह माँ होती है।
सारा जहान होती है ,माँ, माँ होती हैं ।

अलका शर्मा

सत्यजीत, एस० पी० यादव एवं उमेश कुमार शर्मा
कृषि विज्ञान केन्द्र, झज्जर
क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र बावल
चौ० चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार

तुलसी की उन्नत खेती

तुलसी का पौधा औषधीय गुणों से परिपूर्ण एवं सुगंधित तेल का उत्तम स्रोत है। तुलसी (ओसिमम बेसिलिकम) को स्वीट बेसिल या फ्रेंच बेसिल या इंडियन बेसिल आदि नामों से भी जाना जाता है। यह प्रजाति बहुत ही उपयोगी है, क्योंकि इसमें मीठा तुलसी का तेल (स्वीट बेसिल आयल) मिलता है। लगभग 3000 साल से इसकी खेती यूरोप और एशिया में की जा रही है। ओसिमम बेसिलिकम लेमिएसी कुल का पौधा है। पौधे की लंबाई 30–90 सें.मी. होती है। पत्तियों की लंबाई 3–5 सें. मी. होती है। पौधे में बहुत सी तेल कोशिकाएं होती हैं जो सुगंधित तेल देती हैं।

उपयोग: विभिन्न प्रजातियों की तुलसी के तेल में रासायनिक तत्व अलग-2 होने के कारण विभिन्न उत्पादों में प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग सुगंध बनाने, सर्दियों की औषधियों के निर्माण, खाँसी एवं कफ की दवा बनाने, कन्फैक्शनरी उद्योग एवं टूथ पेस्ट, मारुथवाश, डेन्टल क्रीम आदि के निर्माण में किया जाता है। इसका तेल खाद्य पदार्थों को सुवासित करने में भी किया जाता है।

भूमि एवं जलवायु: तुलसी को विभिन्न प्रकार की मदाओं एवं जलवायु में आसानी से उगाया जा सकता है। तुलसी की खेती करने के लिए दोमट एवं बलुई दोमट मिट्टी जिनका पी.एच. 5–8 हो एवं जलधारण क्षमता अच्छी हो, उपयुक्त समझी जाती है। अधिक रेतीली व भारी दोमट मिट्टी

उपयुक्त नहीं है। उत्तर भारत के मैदानी भागों में तुलसी को ग्रीष्म ऋतु की फसल के रूप में उगाया जा सकता है। अधिक वर्षा तथा पाला तुलसी की उपज पर बुरा प्रभाव डालते हैं।

खेत की तैयारी: खेत को एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से तथा दो बार देसी हल या कल्टीवेटर से जोत कर पाटा लगाएं। गोबर की गली सड़ी खाद उपलब्ध हो तो अंतिम जुताई के समय मिट्टी में मिला दें। खेत की तैयारी इस प्रकार करें कि मई-जून में पौध लग जाए।

किस्म: कुसुमोहक एवं विकार सुधा सिमैप लखनऊ द्वारा विकसित किस्में हैं।

नर्सरी: मैदानी भागों में बीज की नर्सरी अप्रैल-मई में एक मीटर चौड़ी व चार मीटर लंबी उठी हुई बनाएं तथा घास-फूस की गली सड़ी खाद मिलाएं तथा प्रत्येक क्यारी में 4 किलो गोबर-फूस रहित हो। प्रति क्यारी में 20–30 ग्राम बीज बोएं। तुलसी का बीज बहुत है। हल्का होता है इसलिए उसमें रेत मिला लें। बुवाई करते समय लाइन से लाइन की दूरी 6 सेंमी रखें। एक एकड़ की रोपाई के लिए 8 क्यारियां तथा 200–250 ग्राम बीज पर्याप्त होता है। बीज का भाव लगभग 500 रु. प्रति किलो है। नर्सरी को पुआल से ढक दें व सिंचाई करें। तुलसी का बीज 3–10 दिन में जम जाता है। जैसे ही बीज उग आए पुआल को हटा दें। ज्यादा गर्मी के दिनों में हल्का पानी सुबह और शाम लगाएं। 20–25 दिन के बाद पौधा



10-15 सै.मी. का हो जाए तो रोपाई: नर्सरी से पौध उखाड़ने के उसे उखाड़ कर खेत में रोप दें। तुरन्त बाद पौध को गीले कपड़े या टाट की बोरी से ढक दें जिससे अधिक गर्मी के कारण पौध न सायंकाल में करें। लाइन से लाइन मुरझाए। पौधों की रोपाई की दूरी 45 सें.मी. तथा पौधों की क्यारी की रोपाई करने के बाद दूरी 30 सें.मी. रखें। प्रत्येक सिंचाई करते जाएं। खाद: तुलसी की खेती में अधिक की खाद प्रति एकड़ खेत तैयार पैदावार के लिए 15-16 टन गोबर करते समय डालें।

सिंचाई तथा जल प्रबंध: वर्षा शूत होने से पहले 10-12 दिन के अंतर पर सिंचाइयां करें। सितंबर में भी सिंचाई की आवश्यकता पड सकती है। अधिक वर्षा होने पर ज्यादा देर तक खेत में पानी न रुकने दें।

निराई-गुड़ाई तथा खरपतवार नियंत्रण: पहली निराई गुड़ाई 20-25 दिन बाद तथा दूसरी 40-45 दिन बाद करनी चाहिए।

कटाई: तुलसी की फसल 10-12 सप्ताह में तैयार हो जाती है। पौधों की निचली पत्तियाँ पीली पड़ने पर कसल की कटाई करें। अंतिम कटाई के समय पूरे पौधे को ही काट कर तेल निकलवा सकते हैं। कटाई के बाद 4-5 घंटे फसल को हल्की धूप में सुखा लें। पहली कटाई 75-90 दिन तथा शेष कटाइयां 45-60 दिन के अंतराल पर करें। फसल की कटाई भूमि की सतह से 15-20 से. मी. ऊपर हे करें जिससे अगली कटाई के लिए फसल जल्दी तैयार हो सके। शाक की पैदावार और तेल की मात्रा भूमि की उर्वरा शक्ति और जलवायु पर निर्भर करती है।

प्रमुख कीट: तुलसी में कई प्रकार के कीट पत्तियों व फूलों को बाकर नष्ट करते हैं जिनमें से प्रमुख कीट इस प्रकार हैं:

तुलसी का पर्ण बेलक: इस कीट का प्रकोप मैदानी भागों में जुलाई सितंबर तक देखा गया है। मुंडी पत्तियों को लपेट कर अंदर ही अंदर नष्ट कर देती है। कभी-कभी कीट की सूंडी फूल के बास जाला सा बना कर अंदर के फूल को चट कर जाती है। रोकथाम के लिए बायो इन्सेक्टीसाईड का प्रयोग करें।

रोयंयुक्त सूडी : वयस्क मादा समूह में निचली पत्तियों पर अडे देती है। 4-6 दिन में अडों से बच्चे निकलने लगते हैं। प्रथम व द्वितीय अवस्था में सूडियां समूह में रह कर पूरा पौधा चट कर जाती है। तीसरी व चौथी अवस्था में

सूडी एक पौधे से दूसरे पौधे पर, फिर धीरे-धीरे पूरे खेत में पहुंच जाती है। रोकथाम के लिए शुरु की अवस्था में जब कीट समूह में हो तो पौधे को उखाड़ कर जला दें तथा बायो इन्सेक्टीसाईड का प्रयोग करें।

प्रमुख रोग:

झुलसा: रोग से पौधे के ऊपरी भाग में चकते बन जाते हैं जो शुरु में बादामी तथा बाद में काले हो जाते हैं। कभी-कभी रोग तने पर भी चकते बनाता है। रोगग्रस्त पत्तिया गिर जाती हैं। यदि पौधों पर रोग का आक्रमण अधिक हो तो उन्हें उखाड़ कर जला दें तथा जैविक फुदनासक बायो का प्रयोग करें।

पत्तियों का झुलसा: रोग से सबसे पहले छोटे-छोटे धब्बे बनते हैं और बाद में मिल कर बादामी बड़े चिकते हो जाते हैं। रोग का प्रकोप पुरानी पत्तियों पर ही अधिक होता है। रोकथाम झुलसा रोग की तरह करें।

उकठा: यह रोग फ्यूजेरियम आक्सीस्पोरम नामक फफूंदी द्वारा होता है। शुरु में रोग का आक्रमण होने पर पत्तियां मुरझाने लगती हैं। फिर शाखा मुरझाती है और धीरे-धीरे पूरा पौधा सूख जाता है। पानी जमा होने वाली भूमि में रोग का प्रकोप अधिक होता है। यदि पौधे को उखाड़ कर बीच में चीर कर देखा जाए तो तने के अंदर बादामी धारी दिखाई देती है। खेत में उचित जल निकास का प्रबंध करें। रोपाई करने से पहले 0.2 प्रतिशत टेफासान या एगलोल के घोल में पौधे की जड़ों को डुबो कर रोपाई करके कुछ रोकथाम की जा सकती है।

तेल की पैदावार: कटाई के बाद 4-5 घंटे तक फसल को छाया में सुखा लें जिससे पौधों की नमी कम हो सके। इस बात का ध्यान रखें कि पौधों को धूप न लगे, बरना तेल की मात्रा कम हो जाएगी। कटाई खुले मौसम में करने से उपज अच्छी मिलती है तथा भाप द्वारा आसवन विधि से तेल निकालें। ताजा बजन के अनुसार पौधों में 0.2-0.3 प्रतिशत तेल होता है। एक एकड़ से 0-60 किलो तेल प्रति वर्ष 2-3 कटाई में प्राप्त होता है। तेल की गुणवत्ता लिनालूल, मिथाईल चैविकोल एव मिथाईल सिनामेट पर निर्भर करती है।

आय-व्यय : तेल का औसत भाव 200-250 रुपए प्रति किलोग्राम है और खेती पर लगभग 3000 रु. प्रति एकड़ खर्च आता है। इस प्रकार लगभग 6000 रु. प्रति एकड़ की आय अप्रैल से नवम्बर तक होती है।

सपना

किसी छोटे से गाँव में अजय नाम का 17 साल का लड़का रहता था। घर में माँ, दो छोटी बहनें और एक बीमार पिता। पिता की तबीयत के कारण खेती बटाई पर दे दी थी। घर की कमाई का जरिया था माँ का सिलाई का काम और अजय की दूध की डेयरी वाली पार्ट-टाइम नौकरी।

अजय का सपना था सेना में जाना। NDA की तैयारी करना चाहता था, पर किताबें खरीदने के पैसे नहीं थे। स्कूल से लौटते वक्त वह रोज शहर की लाइब्रेरी के बाहर खड़ा हो जाता। शीशे से अंदर बच्चों को पढ़ते देखता और वापस लौट आता।

गाँव के लोग कहते, "बेटा, सपने देखना छोड़। दूध बाँट, ब्याह कर, घर संभाल। तेरे बस का नहीं फौज।" अजय चुप रहता। उसने अपनी डायरी में लिख

रखा था, "जो लोग उड़ना नहीं जानते, वही पंख काटने की सलाह देते हैं।"

एक दिन दूध देते समय उसकी पुरानी साइकिल की चेन टूट गई। साइकिल वही थी जिससे उसके पिता सब्जी बेचते थे। अब उसके पास नई साइकिल के पैसे थे, न चेन ठीक कराने के। 3 किमी पैदल चलकर दूध पहुँचाया। देर होने पर डेयरी मालिक ने 50 रुपये काट लिए। उस रात अजय बहुत रोया। माँ ने सिर पर हाथ फेरा और कहा, "बेटा, रास्ते बंद होते हैं, मंजिलें नहीं। कोई और रास्ता ढूँढ।"

अगले दिन अजय लाइब्रेरी के गार्ड से मिला। बोला, "ताऊ, मैं रोज 2 घंटे झाड़ू-पोछा कर दूँगा, बदले में मुझे 1 घंटे बैठकर पढ़ने दोगे?" गार्ड हँसा, "पढ़कर क्या करेगा? अफसर लगेगा?" अजय ने सिर झुका





लिया। तभी लाइब्रेरियन मैडम निकलीं। उन्होंने सब सुन लिया था। बोलीं, "कल से आ जाना। झाड़ू की जरूरत नहीं। बस यहाँ अनुशासन से पढ़ना।"

अजय की जिंदगी बदल गई। सुबह 4 बजे उठता, 5 से 8 दूध बाँटता, 9 से 2 स्कूल, 3 से 6 लाइब्रेरी, रात को माँ के साथ सिलाई में मदद। नींद 5 घंटे। दोस्तों ने मजाक बनाया, "NDA वाले साहब", पर अजय ने जवाब देना छोड़ दिया। उसने पुराने अखबार से करेंट अफेयर्स काटकर कॉपी में चिपकाए। गणित के फॉर्मूले दीवार पर लिख दिए। अंग्रेजी के लिए बच्चों की ट्यूशन पढ़ानी शुरू की, 300 रुपये महीने। उसी से एक सेकंड-हैंड NDA की किताब खरीदी।

6 महीने बाद NDA का फॉर्म निकला। फीस थी 100 रुपये। घर में कुल 80 रुपये थे। माँ ने अपनी चाँदी की पायल गिरवी रख दी। अजय ने मना किया तो बोलीं, "पायल फिर आ जाएगी, मौका नहीं।" अर्जुन ने फॉर्म भरा।

परीक्षा का दिन आया। सेंटर था 70 किमी दूर, बस का किराया 90 रुपये। जेब में 60 थे। अर्जुन रात 1 बजे उठा और साइकिल उठाई। वही टूटी-फूटी साइकिल, जिसमें अब पैडल भी हिलता था। 4 घंटे में परीक्षा स्थान पहुँचा। रास्ते में दो बार चेन उतरी, हाथ काले हुए, कुर्ता पसीने से भीग गया। परीक्षा हॉल में गार्ड ने रोका, "ये क्या हाल बना रखा है?" अजय ने सिर्फ एडमिट कार्ड दिखाया।

पेपर देकर लौटा तो बुखार चढ़ गया। 3 दिन बिस्तर पर। गाँव वालों ने कहना शुरू किया, "देखो, कहा था औकात से बाहर सपना मत देखो।" पिता की आँखों में भी डर था। पर माँ रोज माथा चूमती, "तूने अपनी तरफ से पूरा किया न? बस।"

2 महीने बाद रिजल्ट आया। अजय ने लिखित परीक्षा पास कर ली थी। अब SSB इंटरव्यू में। जाना-आना, रहना, कम से कम 2000 रुपये चाहिए। घर में फिर वही सवाल, पैसे कहाँ से आएँ? अजय ने हार नहीं मानी। उसने गाँव के सरपंच से मदद माँगी। सरपंच बोले, "फौज में जाएगा तो गाँव का नाम होगा।"

उन्होंने 500 दिए। स्कूल के मास्टर जी ने 300 दिए। ट्यूशन वाले बच्चों के माँ-बाप ने 50-50 करके 400 जुटाए। लाइब्रेरियन मैडम ने अपना पुराना कोट दिया, "इलाहाबाद में टंड है।"

SSB के 5 दिन सबसे कठिन थे। ग्रुप टास्क में अजय के जूते फट गए। उसने रस्सी से बाँध लिए। इंटरव्यू में अफसर ने पूछा, "तुम्हारी सबसे बड़ी कमजोरी?" अजय ने कहा, "सर, मेरे पास संसाधन कम हैं। पर यही मेरी ताकत है, क्योंकि मुझे हर चीज की कीमत पता है।" अफसर मुस्कुराए।

गाँव में अफवाह फैली, "फेल हो गया होगा, इतने दिन हो गए।" 21वें दिन पोस्टमैन आया। एक बड़ा लिफाफा। माँ के हाथ काँप रहे थे। अर्जुन ने खोला: "Recommended for National Defence Academy"

अजय को लगा, मंजिल मिल गई। पर असली इम्तिहान तो अब शुरू हुआ था। NDA के 3 साल हिम्मत, अनुशासन की यूनिवर्सिटी।

पहला दिन, 4:30 बजे बिगुल बजा और 10 मिनट में ग्राउंड पर रिपोर्टिंग। अजय गाँव में 5 किमी दौड़ता था। यहाँ पहले ही दिन 6 किमी क्रॉस-कंट्री, वो भी 20 किलो बैग के साथ। पैर जवाब दे गए, पर रुकने का मतलब सजा।

PT-परेड-ड्रिल, दिन में 4 बार वर्दी बदलना। जूते इतने पॉलिश कि चेहरा दिखे। एक धब्बा = 50 पुश-अप्स। पहले हफ्ते में हथेलियों के छाले फटकर खून में बदल गए।

कैम्प रोवर 40 किमी पैदल, रात जंगल में, 2 घंटे नींद, पीठ पर राइफल, राशन। बारिश में भी टेंट नहीं। अजय के जूते कीचड़ में धँस गए, निकाले तो तला ही निकल आया। नंगे पाँव 8 किमी चलकर पहुँचा।

पहाड़ पर चढ़ाई-60 डिग्री ढलान। साथी कैडेट बेहोश हुआ तो अजय उसे कंधे पर लादकर ऊपर पहुँचाया। नीचे उतरते वक्त खुद गिरा, घुटना छिल गया, पर रिपोर्ट नहीं किया।



4-5 घंटे की नींद, कभी-कभी लगातार 36 घंटे की एकसरसाइज,दिमाग सुन्न, नींद में भी "अटेंशन" सुनकर उछलना पड़ता था। छोटी गलती पर पूरे स्क्वाड्रन को सजा। "तुम्हारी वजह से 40 लोग पुश-अप मार रहे हैं" वाला गिल्ट। यहाँ 'मैं' मरता है, 'हम' जिंदा होता है। घर की याद, फोन 3 महीने तक घर बात नहीं। चिट्ठी ही सहारा। माँ की चिट्ठी पढ़ते वक्त बाथरूम में छुपकर रोना, क्योंकि कैडेट रोते नहीं। दिन भर तोड़े जाने के बाद रात 8 से 11 पढ़ाई। मैथ्स, साइंस, मिलिट्री, हिस्ट्री। फेल हुए तो रीलेगेशन = 6 महीने जूनियर के साथ। इज्जत का सवाल।

भावनात्मक ताकत मिली कि अकेले होते हुए भी अकेले नहीं है

त्योहार पर ड्यूटी दीवाली की रात गार्ड ड्यूटी। गाँव में सब पटाखे चला रहे थे, यहाँ सन्नाटे में राइफल पकड़े खड़ा। फोन पर माँ बोली "बेटा खील खा ले", पर मुँह से आवाज नहीं निकली।

थर्ड टर्म में क्रॉस-कंट्री में आखिरी आया। सीनियर बोला, "गाँव से आए हो, गाँव ही जाओगे।" उस रात अजय ने इस्तीफा लिख दिया। सुबह फाड़कर फेंक दिया। डायरी में लिखा, "थकना मना नहीं है, रुकना मना है।" सबसे बड़ी सीख जो ट्रेनिंग ने दी दर्द

अस्थायी है, छोड़ देना हमेशा के लिए है, जब अजय बुखार में था, तीन कैडेट ने अपनी नींद खराब कर उसकी ड्रेस प्रेस की, जूते पॉलिश किए। बदले में कुछ नहीं माँगा।

इज्जत कमानी पड़ती है गाँव में ताने देने वाले अब सलाम करते हैं। पर सलाम अर्जुन को नहीं, उस वर्दी को है जो दर्द से कमाई गई।

कम संसाधन बहाना नहीं अजय के पास बचपन में साइकिल नहीं थी, यहाँ कई कैडेट के पास महंगे जूते थे। 3 साल बाद पासिंग आउट पर सबकी वर्दी एक रंग की थी। बैकग्राउंड जीरो हो जाता है, बस ग्रिट चलती है।

"ट्रेनिंग ने मुझे अफसर नहीं बनाया, इंसान बनाया। भूखा रहना, गिरना, गाली खाना, फिर उठना। जिस दिन परेड ग्राउंड पर माँ-बाप के सामने कदम-ताल किया था, उस दिन समझ आया—कठिनाइयाँ तुम्हें तोड़ने नहीं, तुम्हें बनाने आती हैं।"

पूरा गाँव गेट पर आ गया। वही लोग जो ताना देते थे, अब मिठाई लेकर खड़े थे। सरपंच ने ढोल बुलवा दिए। डेयरी मालिक जिसने 50 रुपये काटे थे, अब 5000 का लिफाफा देने आया। अजय ने पैसे नहीं लिए। बोला, "ताऊ, बस अगले लड़के की साइकिल ठीक करा देना जब उसकी टूटे।"

आने के बाद अजय ने अपनी टूटी साइकिल को पेड़ के नीचे खड़ा किया। उस पर एक कागज चिपकाया "ये अधूरी साइकिल मुझे पूरी मंजिल तक ले गई।"

3 साल बाद लेफ्टिनेंट अजय छुट्टी पर गाँव आया। उसने गाँव की लाइब्रेरी में 200 किताबें दान दीं। एक छोटा फंड शुरू किया। "NDA सपना फंड"। शर्त सिर्फ एक "पैसा नहीं, हौसला चाहिए।"

सीख – हालात तुम्हारी मंजिल तय नहीं करते, हौसला तय करता है, अर्जुन के पास पैसे नहीं थे, पर इरादा मजबूत था।



SAHKAR SE SAMRIDDI
Aatmanirabhar Bharat, Aatmanirbhar Krishi



IFFCO NANO UREA Plus
and
IFFCO NANO DAP
Promises

More Yield And More Profit

World's First Nano Fertilizer by IFFCO

500 ML Bottle
₹225/-
only

500 ML Bottle
₹600/-
only

IFFCO Nano UREA Plus Liquid



IFFCO Nano DAP Liquid



INDIAN FARMERS FERTILISER COOPERATIVE LIMITED
IFFCO Sadan, C-1 District Centre, Saket Place, New Delhi - 110017, INDIA
Phones: 91-11-26510001, 91-11-42592626. Website: www.iffco.coop



दी हरियाणा राज्य सहकारी आवास
प्रसंघ लि०






भवन निर्माण ऋण योजना

हाउसफैड द्वारा शहरी क्षेत्रों में आर्थिक
रूप से कमजोर वर्ग के पात्र
व्यक्तियों को आवास निर्माण
हेतु 12.50 लाख रूपये तक
का ऋण 7% वार्षिक ब्याज
दर पर उपलब्ध



हर परिवार का सपना
हाउसफैड से
घर बने अपना

-  दी हरियाणा राज्य सहकारी आवास प्रसंघ लि०
-  बेज न०. 49-52, सेक्टर-2, पंचकूला
-  0172-2575847, 0172-2574142
-  housefedhry@gmail.com
-  housefed.haryana.gov.in




पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ



जल है तो कल है

 HARCOFED 

 Bays No. 49-52, Sector - 2, Panchkula

 <https://harcofed.haryana.gov.in/>

 harcofed@ymail.com

हरियाणा राज्य सहकारी विकास फ़ैडरेशन की ओर से सौरव शर्मा संपादक द्वारा हरियाणा सहकारी प्रैस 165-166, इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, चण्डीगढ़ से मुद्रित व प्रकाशित तथा कार्यालय बेज नं. 49-52, प्रथम तल, सेक्टर-2, पंचकूला ।

दूरभाष : 0172-2560340, 2560332 हरकोप्रेस : 0172-2637264